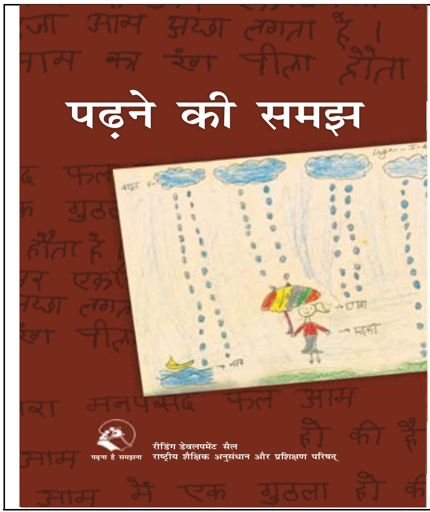

पढ़ने की समझ

शिक्षक संदर्शिका

प्रकाशक	एन.सी.ई.आर.टी.
प्रकाशन वर्ष	नवंबर 2008
शब्द चिह्न	रीडिंग डेवलपमेंट सैल
मूल्य	नि:शुल्क
संस्करण	प्रथम
पृष्ठ संख्या	178
वर्गीकरण	शिक्षक प्रशिक्षण संदर्शिका
भाषाओं में उपलब्ध	हिन्दी

पढ़ने की समझ
संदर्शिका क्यों?

पढ़ने की समझ की व्याख्या करने वाली सामग्री का हमारे देश में नितांत अभाव है। ऐसी स्थिति में अपने-आप में यह सम्भवतः एक पहली संदर्शिका है जो पढ़ने की समझ की बात करती है। इसका उद्देश्य उन सभी की 'पढ़ने' को लेकर एक समझ बनानी है जिनका किसी न किसी रूप में बच्चों की ज़िंदगी से सरोकार है, या जो साक्षरता के क्षेत्र में काम करते हैं, नीति निर्धारक हैं, या अध्यापक हैं ताकि वे अपने-अपने ढंग से मौजूदा स्थिति में कुछ अंतर ला सकें।

एक व्यापक पाठक वर्ग के लिए होते हुए भी यह संदर्शिका अध्यापक केन्द्रित है। पढ़ना सिखाने के संबंध में किसी भी अध्यापक की कक्षा का स्वरूप उसकी व्यक्तिगत समझ से निर्धारित होगा। ऐसी परिस्थिति में यह अपेक्षित है कि अध्यापकों की पढ़ने को लेकर एक सुलझी हुई व्यापक समझ होना जरूरी है।

अध्यापकों के लिए बहुत सी प्रशिक्षण सामग्रियाँ तैयार होती हैं। यह सदंर्शिका उस तरह से निर्देशात्मक नहीं है 'पढ़ने की समझ' क्रमवार तरीके से कोई निर्देश नहीं देती। इसके पीछे सोच यह है कि यदि किसी विषय की समझ बनती है, अवधारणाएँ स्पष्ट होती हैं तो दरअसल वे अध्यापक को आत्मनिर्भर बनाती हैं। यहाँ शिक्षकों को एक तरह से यह छूट है कि इसी समझ के आधार पर वे अपने आगे के पढ़ाने के तरीकों को तय करें।

विषय-सूची

पढ़ने की समझ के अलग-अलग पहलुओं को अध्यायों में बाँटते समय यह पूरा ध्यान रखा गया है कि विषय की एक समग्र समझ बने और कक्षा का संदर्भ भी बराबर साथ बना रहे।

भाग 1 : संदर्शिका

1. पढ़ने का संकट

दुर्भाग्यवश स्कूलों में 'पढ़ना' एक कष्टप्रद प्रक्रिया बन गई है, जहाँ साल-दर-साल एक अर्थहीन, यांत्रिक, उबाऊ प्रक्रिया से गुज़रने के बाद भी अधिकांश बच्चे समझकर पढ़ने में असमर्थ हैं। ये हताशा या तो उन्हें स्कूल छोड़ने के लिए मजबूर कर देती है या फिर बचे हुए स्कूली वर्षों में पढ़ने में जूझते रहने के बावजूद भी वे निरक्षर ही कहलाते हैं।

2. बच्चे और भाषा

बच्चे की भाषा हमें हमेशा ही रोमांचित करती रही है। यदि हम उनकी भाषा को और करीब से देखें तो हमें यह समझने का अवसर मिलता है कि वह कैसे विकसित होती है, किन नियमों से परिचालित होती है, **बच्चे और भाषा** अध्याय में हमने कुछ इन्हीं बारीकियों को छूने की कोशिश की है।

3. पढ़ना सीखना और स्कूल

पढ़ने की संकल्पना को समझने से पहले यह ज़रूरी है कि हम स्कूलों में 'पढ़ने' के मौजूदा परिदृश्य को समझें, उनके कारणों को जानें। **पढ़ना सीखना और स्कूल** अध्याय में कुछ बच्चों के 'पढ़ना सीखने' के ऐसे उदाहरण हैं जो वास्तविक स्थितियों को दर्शाते हैं और इस ओर इंगित करते हैं कि पढ़ने को लेकर शिक्षा व्यवस्था काफी हद तक असफल रही है।

4. पढ़ना – एक नज़रिया

पढ़ने जैसी सरल और स्वाभाविक प्रक्रिया भी स्कूल में आकर एक यांत्रिक और उबाऊ प्रक्रिया बन जाती है। इसका कारण शायद यह है कि अभी भी पढ़ने को लेकर हमारी समझ अपर्याप्त है। **पढ़ना – एक नज़रिया** अध्याय 'पढ़ने की समझ' को बड़े सहज ढंग से खोल कर रख देता है।

5. लिखित भाषा और कक्षा का स्वरूप

पढ़ना सीखने के लिए कुछ शर्तें जरूरी हैं जिनका कक्षा में होना अनिवार्य जैसे पढ़ने के भरपूर अवसर देना और प्रिंट समृद्ध माहौल बनाना। यह अध्याय इन्हीं की बातें करता है।

6. आकलन

जब हम पढ़ने की वैकल्पिक समझ की बात करते हैं तो ज़ाहिर है कि यह समझ बच्चों व पढ़ाने की प्रक्रिया के **आकलन** को लेकर भी नई समझ की भी माँग करती है। यह समझ आकलन को ज़्यादा लचीला और व्यवस्थित बनाती है।

7. पढ़ने में निरंतरता

एक ऐसा अध्यापक जो स्वयं एक अच्छा पाठक भी है वही बच्चों में पढ़ने की ललक जगा सकता है और उन्हें एक स्थायी पाठक बनने की ओर ले जा सकता है। अध्यापक अपनी पढ़ने की समझ को कैसे निरंतर विकसित करते रहें, **पढ़ने की निरंतरता** अध्याय इसकी प्रासंगिकता को स्थापित करता है।

भाग 2 : प्रशिक्षण पुस्तिका

– पढ़ने की समझ... शिक्षकों से संवाद

अध्यापकों के लिए बहुत सी प्रशिक्षण सामग्रियाँ तैयार होती हैं। यह सदंर्शिका उस तरह से निर्देशात्मक नहीं है। 'पढ़ने की समझ' क्रमवार तरीके से कोई निर्देश नहीं देती। इसके पीछे सोच यह है कि यदि किसी विषय की समझ बनती है, अवधारणाएँ स्पष्ट होती हैं तो दरअसल वे अध्यापक को आत्मनिर्भर बनाती हैं। यहाँ शिक्षकों को एक तरह से यह छूट है कि इसी समझ के आधार पर वे अपने आगे के पढ़ाने के तरीकों को तय करें।